शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जनवरी 2019
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

इन्दौर महानगर के मालवी कहानीकार : श्रीनिवास जोशी

विनोद वर्मा (शोधार्थी)
डॉ.पुरुषोत्तम दुबे (शोध निर्देशक)
भाषा अध्ययन शाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

मनुष्य सभ्यता के विकास के साथ ही कहानी का भी उद्भव हो गया था। अपने आसपास की घटनाओं से प्रभावित होकर जब उसने कल्पना का मिश्रण प्रारंभ किया, तब कहानी का श्रीगणेश हो गया। लोकसाहित्य में काव्यात्मक रूप में कहानियां ही मिलती हैं। गद्य विधा के चलन में आने के बाद बोलियों में भी कहानी कला का विकास हुआ। मालवा का उल्लेख हमारे प्राचीन धर्मग्रंथों में मिलता है। वर्तमान में लगभग दो करोड़ लोग मालवी बोली बोलते हैं। मालवी बोली में प्रभूत मात्रा में साहित्य सृजन हो रहा है। मालवा की संस्कृति और परंपरा में श्रीनिवास जोशी मालवी गद्य के प्रथम साहित्यकार हैं। उन्होंने जीवनपर्यंत शब्द की साधना की। प्रस्तुत शोध पत्र में उनकी मालवी कहानी कला पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

पंडित श्रीनिवास जोशी आधुनिक मालवी कहानी के पितामह हैं। पुणे में 'प्रभात' फिल्म कंपनी से जुड़े होने के बाद वे बाद में मुम्बई में रहने लगे। प्रभात फिल्म कंपनी में उन्होंने हिंदी-मराठी फिल्मों के लेखन-निर्देशन और निर्माण में चर्चित रचनाएं दीं। "देश की आजादी के पूर्व से ही उन्होंने मालवी परिवार और उसके परिवेश से जुड़े प्रसंगों को कहानी का विषय बना लिया था।"1

श्रीनिवास जोशी का कहानी संग्रह 'वारे पट्ठा भारी करी' के संबंध में बालकवि बैरागी की यह टीप बड़ी महत्वपूर्ण है कि "श्रीनिवास जोशी का कहानी संग्रह वारे पट्ठा भारी करी मालवी गद्यकारों की अगवानी का श्रीगणेश है।"2

श्रीनिवास जोशी की कहानियों का संकलन 'वारे पट्ठा भारी करी' अपनी मालवी रसात्मकता में प्रगतिशील व्यवस्था का बखान करता है। प्रस्तुत संग्रह की कहानियों में मालवी लोक संस्कार, पारिवारिक मान-मर्यादा और मालवी वृत्तियों-प्रवृत्तियों की असल तस्वीर देखने को मिलती है। 'वारे पट्ठा भारी करी' कहानी संग्रह में श्रीनिवास जोशी की पंद्रह कहानियों संकलित हैं। इन सभी कहानियों के कथानक में कहानीकार ने अपने आसपास के चरित्रों को अपनी स्मृति में ताजा किया है।

श्रीनिवास जोशी की कहानियां

जोशी जी की कहानी 'डी.डी.टी. मिट्ठू स्वामी' यानी 'देपालपुर धामणोदवाला तोलाराम मिट्ठू स्वामी के चरित्र के इर्द-गिर्द घूमता है। मिट्ठू स्वामी का नाम सुनने में मद्रासी लगता है, मगर वे मालवा के ग्राम देपालपुर निवासी हैं। किसी मद्रासी देवता की मिन्नत से मिट्ठू हुआ इस कारण उनके पिता ने उनका नाम मिट्ठूलाल के स्थान पर मिट्ठू स्वामी रख दिया। नाम का चमत्कार यह हुआ

कि मिट्ठू स्वामी को ए.जी के दफ्तर में मद्रासी पुत्र जानकर काम मिल गया। जहां मिट्ठू स्वामी की गुलजारी लाल भंगेड़ी वाला नामक कारकून से मित्रता हुई और मिठाई से हमेशा परहेज रखने वाला मिट्ठू स्वामी संगत में पड़कर भांग का नशा करने लगा। कहानी का कथानक यहीं से गति पकड़ता है। भांग की लत की वजह से मिट्ठू स्वामी की अपनी पत्नी से रोज की लड़ाई होती है। फलस्वरूप मिट्ठू स्वामी नौकरी छोड़कर मिठाई की दुकान डाल लेते हैं। जिनमें उनकी मदद उनकी बेटी लापसी करती है। दुकान चल निकलती है। भांग पीने वालों की भीड़ दुकान से मिठाई खरीदती रहती है। मिट्ठू स्वामी भी भांग चढ़ाकर मिठाई खा-खाकर कभी शरीर से सूखे कांटे की तरह थे, अब गोल-मटोल हो गए। दुकानों से इतनी आमदनी होने लगी कि मिट्ठू स्वमी और उनकी बेटी लापसी से रोज की आमदनी गिनते नहीं बनती थी।

बेटी और पत्नी को साक्षात् लक्ष्मी समझते हुए मिट्ठू मन में दोनों के प्रति आदर भाव था।

कहानी अंत में कौतूहल पैदा करती है। मिट्ठू स्वामी की दुकान से बिकने वाले हलवे में कंकर और जहर मिले होने की शिकायत थाने में पहुंचकर दरोगा को कर देता है। पुलिस के हलवे की थाली सहित मिट्ठू स्वामी को उसकी बेटी लापसी के साथ थाने बुलाती है। जो हलवे में विष नहीं होने के निदान में मिट्ठू और उसकी बेटी हलवा खाते हैं। दरोगा निश्चिंत हो जाता है कि हलवे में विष की शिकायत झूठी है। बावजूद इसके हलवे की डॉक्टरी जांच के लिए भेजने की बात कोतवाल करते हैं। इस कारण मिट्ठू मारे डर के सुबह जल्दी घर का सामान बटोरकर बीवी और बेटी लापसी सहित गांव छोड़कर अन्य जगह बसने चला जाता है। कथानक के चरम पर अनोखी बात सामने आती है कि डॉक्टरी जांच को भेजे गए हलवे में चूहे की लेंडियां निकलती हैं।

इस प्रकार डी.डी.टी. मिट्ठू स्वामी का कथानक रोचक, घुमावदार और हास्य पैदा करने वाला होकर मालवा की मादक, मोहक, रसीली मिठास को घोलने वाला है।

इसी प्रकार श्रीनिवास जोशी की प्रायः सभी कहानियों के कथानक मनोरंजन से परिपूर्ण होकर व्यक्ति के जीवन में बदलावों और नियति पर आधारित है।

हास्य विनोद

मालवी के प्रख्यात रचनाकार श्री नरहरि पटेल ने श्रीनिवास जोशी को 'मालवी हास्य का अमृतलाल नागर कहा है।''3

वास्तव में श्रीनिवास जोशी की कहानियों में सर्वत्र हास्यरस का रूप देखने को मिलता है। जोशी जी अपनी कहानियों में अपने पात्रों के माध्यम से हास्य-विनोद का वातावरण तैयार कर देते हैं। उनकी कहानियां पाठकों के मन को गुदगुदाती हैं। श्रीनिवास जोशी की कहानी 'टिमी ने टिमटिमेश्वर' में समाहित पात्रों के मध्य होने वाले संवादों में अनेक स्थलों पर हास्य-विनोद का पुट देखने को मिलता है। प्रस्तुत कहानी में नवजात लड़की के नामकरण को लेकर पात्रों के मध्य जो संवाद उभरकर आते हैं, उनमें हास्य रस की छटाएं देखने को मिलती हैं। यथा -

- पण यो सरसती नाम कहूं बुरो है?

- यो सरसती, सावित्री, सत्यभामा को जमानो नी है जीजी। जरा बंगाली नाम देखो। सुभाष, रेखा, मंदा, विनोदिनी, मनोबीना।

- हां एसेज कोई नाम होय तो म्हारो कइं केणोनीं

- तो फिर हम टिमी नाम रख्यांगा। सब एक स्वर में बोल्या।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जनवरी 2019
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

- टिमी ? यो बी कोई नाम है ?
- हां, जीजी।
- देवी देवतो को है ?
- म्हारा ख्याल से यो विलायती देवी को नाम है ?
- नी भई, म्हारे छोरी खे विलायती नी बणाणी। दूसरो कोई नाम बताओ नी तो हूं सरसतीज रक्खूंगा।
- अरे, विलायती कायको आयो वो गेली। देसी है यो आपणायां कोज।
- हां, टिमी पारवती को नाम है। अपणा पेटलावाद के पास नागारूंडी नाम की टेकड़ी हेनी ? वां भगवान टिमटिमेश्वर महादेव को भोत बड़ो स्थान है। वां कीज माता को नाम है - टिमी।''4

एक अन्य कहानी 'झुम्मरलाल जी की हिचकी' में स्थान-स्थान पर हास्य का रंग देखने को मिलता है। मालवा में एक बड़ी बेढंगी सोच प्रचलित है। यदि किसी मनुष्य को बार-बार हिचकी आती है, तो समझ लीजिए उसके दिन पूरे हो गए। यानी अब ईश्वर की ओर उसका बुलावा आने वाला है। इसी संदर्भ को लेकर 'झुम्मरलाल जी की हिचकी' कहानी के नायक झुम्मरलाला को बार-बार हिचकी उठती है। झुम्मरलाल के न बच पाने का अंदेशा लेकर धनसुखलाल कोई पांच बरस बाद गांव के एक परिचित के यहां इस बात की खबर देने पहुंचते हैं। फिर जो संवाद आता है वह बहुत आनंददायक है:

वे नमस्कार करीने बोल्या - घबराओ मत। हूं चंदो मांगने नी आयो हूं।
- फिर आज कैसे आणो हुओ भगवान। - मने पूछयो। उनकी आंख में आंसू अई गया।
- मने कियो 'धन्नाभाई, मुनसिपालटी का नल में मने दुफेरे पाणी देख्यो है, पण तमारी आंख में आंसू मने कदी नी देख्या। आज एसो कोन से संकट अई पड्यो है ?

वो बोल्या - म्हारे दिखे, झुम्मरलालजी अब बचेगा नी ?
- यो तम काय पर से कोहो ?
- उनखे हिचकी शुरू हो गई है।''5

श्रीनिवास जोशी की कहानियों में हास्य विनोद पर चर्चा करते हुए श्री श्यामसुंदर व्यास ने लिखा हे, ''भाई श्रीनिवास जी मालवी गद्य की 'श्री' ही नहीं उसमें रमे, रूपे निवास करने वाले सजीव कलावंत थे। मालवी गद्य को सरस संवादों की बानगी से रससिक्त करते हैं।''6

भाषागत सौंदर्य

श्रीनिवास जोशी की भाषा मालव प्रांत के आमजन की भाषा है। उनकी भाषा में मालवी बोली की रवानगी कल-कल झरने-सी बहती दिखाई देती है। मालवे के प्रचलित मुहावरों को पकड़कर जोशी जी अपने साहित्य में मालवी जीवन का व्यावहारिक रूप खड़ा कर देते हैं। श्रीनिवास जोशी की पत्नी वंदना जोशी 'इच्छापूर्ति' शीर्षक से अपने दो शब्द के माध्यम से टिप्पणी करती हैं कि, ''उनका साहित्य में हास्य रस छलकती दिखे है।''7

श्रीनिवास जोशी के कतिपय कथन उनके भाषागत सौंदर्य को बढ़ा देते हैं। यथा

मूंडो बंद रखणे का पैसा लूं (कहानी चतुरभुज) पृष्ठ 19

तमारी हांसी ने छी-थू (कहानी झुम्मरलाल जी की हिचकी) पृष्ठ 27

गया होयगा मसान में अपना करम खे रोने (कहानी सोनापाली) पृष्ठ 33

अब दिल फटाका की तरह फट-फट जाने लगा (कहानी हम भी एक दिन मिनिस्टर पर था) पृष्ठ 43

श्रीनिवास जोशी की भाषा सरल, सहज होकर बनावट और थोपी नहीं हुई है। यही उनकी भाषा का सौंदर्य है।

संदर्भ ग्रंथ

1 वारे पड्डा भारी करी, मालवी की श्रेष्ठ हास्य कहानियां, श्रीनिवास जोशी, संपादक: नरहरि पटेल, श्री मध्यभारत हिंदी साहित्य समिति इन्दौर, पृष्ठ 5

2 मालवा की सुवास, श्रीनिवास, बालकवि बैरागी, वारे पड्डा भारी करी, कहानी संग्रह, संपादक: नरहरि पटेल, श्री मध्यभारत हिंदी साहित्य समिति, पृष्ठ 5

3 वारे पड्डा भारी करी: श्रीनिवास जोशी, संपादक: नरहिर पटेल, श्री मध्यभारत हिंदी साहित्य समिति, पृष्ठ 10

4 टिमी ने टिमटिमेश्वर, वारे पड्डा भारी करी, कहानी संकलन श्रीनिवास जोशी, श्री मध्यभारत हिंदी साहित्य समिति,

5 झुम्मरलाल की हिचकी, वारे पड्डा भारी करी, कहानी संकलन, श्रीनिवास जोशी, श्री मध्यभारत हिंदी साहित्य समिति, पृष्ठ 25

6 मेरे जिगरी श्री, श्यामसुंदर व्यास, वारे पड्डा भारी करी, संपादक: नरहरि पटेल, श्री मध्यभारत हिंदी साहित्य समिति, पृष्ठ 5

7 इच्छापूर्ति, वंदना जोशी, वारे पड्डा भारी करी, संपादक: नरहरि पटेल, श्री मध्यभारत हिंदी साहित्य समिति, पृष्ठ 1